चोल प्रशासन
(CHOLA ADMINISTRATION)

प्राचीनतम चोल शासकों का उल्लेख संगम साहित्य में किया गया है। इतिहासकारों का विचार है कि संगम साहित्य की रचना ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में की गई थी। अतः प्राचीनतम चोल शासकों को जिनके विषय में निश्चित प्रमाण उपलब्ध हैं, इसी काल का माना जाना चाहिए। चोलों के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली पक्ष चोलों की शासन व्यवस्था ही थी। चोलों के शासन प्रबन्ध के विषय में चोलों के अनेक अभिलेख प्रकाश डालते हैं जिनसे इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है

1. केंद्रीय शासन एवं राजा की स्थिति :- संगमयुग के समान चोल शासनकाल में भी शासन का स्वरूप राजतंत्री था। थल सेना एवं नौसेना का काफी विकास था। चोल साम्राज्य का आय का प्रमुख स्रोत भूमि कर (Land Revenue) था। चोल शासन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता स्वशासन की व्यवस्था थी, कोट्टम (गाँव) से लेकर मण्डल (प्रांत) तक स्वशासन की संस्थाएं होती थीं जो शासन का कार्य देखती थीं। इस प्रकार स्पष्ट है कि चोलों की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यंत उच्चकोटि की थी। डॉ शास्त्री ने चोलों की प्रशासन के क्षेत्र में प्रशंसा करते हुए लिखा है, "योग्य नौकरशाही और सक्रिय स्थानीय सभाओं, जो जनता में नागरिकता की सजीव भावना का संचार करती थीं, के बीच प्रशासनिक दक्षता और शुचिता (Purity) के क्षेत्र में एक उच्च मानदंड स्थापित किया गया था जो संभवतः सम्पूर्ण हिंदू-राज्य में सबसे ऊंचा था।"

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. Of History
S. B. College, Ara

B. A. (Part-II)
Paper-III (6th-13th early A.D.)
10.02.2024
Class - 02 (Second)

Mob: 8809947478
Email: ukrai.sasaram@gmail.com